Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
p-ISSN : 2231–167X, Impact Factor : 2.3982, Volume 07, No. 03, July, 2017, pp. 353-356

भारतीय लोकतंत्र का भविष्य

डॉ0 आलोक कुमार सिंह*

पूरी दुनिया के लोकतंत्र समर्थकों के पास भारत के 16वें लोकसभा चुनाव के महत्व को मनाने के अच्छे कारण हैं। सार्वभौमिक मताधिकार लागू होने के बाद से पहली बार देश भर के 66.4 प्रतिशत मतदाताओं की भागीदारी ने भारत को विश्व के सर्वाधिक मतदान वाले देशों की सूची में शामिल करा दिया है। लम्बे और व्यापक चुनाव अभियान के वावजूद आमतौर पर शान्तिपूर्ण, नियमपूर्वक, स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव भारत की आन्तरिक शक्ति और लचीले लोकतंत्र की तस्दीक करती है। यह आलेख चुनावी प्रक्रिया और भारत में मजबूत होते लोकतंत्र का एक झरोखा पेश करता है। प्राचीन काल से ही लोकतंत्र शासन का एक आदर्श रूप माना जाता रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान निर्माताओं ने भी गाँधी के आदर्श राज्य के उच्चतम आदर्श की प्राप्ति के लिए भारत में भी प्रजातांत्रिक शासन–व्यवस्था के स्वरूप को स्वीकृत दी।

प्रजातंत्र शाब्दिक दृष्टि से दो यूनानी शब्दों से मिलकर बना है– 'Demos', जिसका अर्थ है 'जनता' तथा 'ज्ञतंजवे', जिसका अर्थ है 'सरकार' या 'शासन'। किन्तु अधिकाधिक टीकाकार, जो प्रजातंत्र को केवल एक शासन–व्यवस्था (जनता का शासन) भर मानते हैं, से विलग भारतीय वाड्.मय प्रजातंत्र की संकल्पना को एक वृहद आधार प्रदान करता है। भारतीय विचारकों के लिए प्रजातंत्र केवल एक शासन–व्यवस्था न होकर तुलसीदास के 'रामचरितमानस' में कल्पित उस 'राम–राज्य' की स्थापना का साधन है जिसमें यह कहा गया है कि–

दैहिक, दैविक, भौतिक तापा। राम राज्य कहुं नहिं व्यापा ।।

भारतीय प्रजातंत्र गाँधी जी के इसी आदर्श–राज्य की स्थापना हेतु प्रयासरत है। प्रजातंत्र अपनी तीन अवधारणाओं–स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुता को सर्वाधिक महत्व प्रदान करता है। यह कहा जा सकता है कि यही वे तीन आधार हैं जिन पर प्रजातान्त्रिक मूल्य टिके हुए हैं। इन उच्च आदर्शों (मूल्यों) की प्रतिस्थापना हेतु ही भारत में एक प्रजातान्त्रिक शासन–व्यवस्था का प्रावधान किया गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त संविधान में तथा तदोपरान्त बाद के इन 69–70 वर्षों में भी भारत ने ने सिर्फ सफलतापूर्वक लोकतान्त्रिक–व्यवस्था को बनाये रखा है, वल्कि इसके प्रचार–प्रसार में भी अग्रणी भूमिका निभायी है। भारत को विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने का गौरव प्राप्त है और भारत ने बखूवी इस गौरव को बनाये रखा है। यह अपने आप में एक महान उपलब्धि है।

किसी भी 'लोकतान्त्रिक–व्यवस्था' की सर्वाधिक महत्वपूर्ण शर्त यह है कि वहाँ 'संप्रभुता' जनता के हाथों में हो, भारतीय संविधान अपने प्रस्तावना में ही उद्घोष करता है। ('हम भारत के लोग भारत को एक.... स्वयं को आत्मार्पित करते हैं) यह इस बात का प्रमाण है कि भारत की लोकतांत्रिक मूल्यों में कितनी गहरी एवं मजबूत आस्था है। प्रजातान्त्रिक मूल्यों की स्थापना के उद्देश्य से ही हमारे संविधान में सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक समानता का आदर्श स्थापित किया गया है। भारत के सभी नागरिकों को एक समान मौलिक अधिकार प्रदान किये गये हैं।

प्रजातंत्र हेतु एक महत्वपूर्ण तथ्य है–'**आर्थिक समानता**'। इसके संप्राप्ति हेतु सरकार ने देश के गरीवों, बेरोजगारों, पिछड़ों आदि के लिये अनेकों राहत व विकास की योजनाओं को क्रियान्वित किया है। जवाहर रोजगार योजना, इन्दिरा आवास योजना, वृद्धा पेंशन योजना, प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना, दीनदयाल योजना, उज्जवला योजना,

* अध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, डी0एन0पी0जी0 कॉलेज, फतेहगढ़, उत्तर प्रदेश।